सूचना एवं जनसम्पर्क विभाग, बिहार

प्रेस विज्ञप्ति

संख्या–cm-117
25/02/2017

गंगा की अविरलता बनी रहनी चाहिये :– मुख्यमंत्री

पटना, 25 फरवरी 2017 :– आज होटल मौर्या में गंगा की अविरलता पर आयोजित अन्तर्राष्ट्रीय सेमिनार का मुख्यमंत्री श्री नीतीश कुमार ने दीप प्रज्ज्वलित कर उद्घाटन किया। इस अवसर पर सेमिनार को संबोधित करते हुये मुख्यमंत्री ने कहा कि सबसे पहले मैं गंगा की अविरलता पर आयोजित अन्तर्राष्ट्रीय सेमिनार में आये देश–विदेश के सभी विशेषज्ञों का स्वागत एवं अभिनंदन करता हूँ। उन्होंने कहा कि राज्य सरकार द्वारा इस सेमिनार का आयोजन किया गया है। इस सेमिनार को काफी अच्छा रिस्पांस मिला है। इस सेमिनार में 60 से ज्यादा विशेषज्ञों ने अपनी हिस्सेदारी की सहमति दी है तथा उपस्थित भी हैं, यह बड़ी खुशी की बात है। उन्होंने कहा कि इस सेमिनार में सब लोगों को सुनने का मौका मिला। किसी प्रकार का कोई भ्रम नहीं रहना चाहिये। यह सम्मेलन/सेमिनार फरक्का बराज को डिकमीशन करने के लिये नहीं बल्कि गंगा नदी की अविरलता कैसे कायम रहे, इस विषय पर चर्चा करने के लिये बुलाया गया है। उन्होंने कहा कि आयोजित इस अन्तर्राष्ट्रीय सेमिनार में गंगा की अविरलता से संबंधित विभिन्न बिन्दुओं पर विस्तृत चर्चा की जायेगी।

मुख्यमंत्री ने कहा कि हम चाहते हैं कि गंगा की अविरलता पर राष्ट्रीय विमर्श हो ताकि गंगा की अविरलता कायम रहे। उन्होंने कहा कि केन्द्र सरकार द्वारा नमामी गंगा प्रोजेक्ट लाया गया है। इन सभी प्रोजेक्ट में निर्मलता की बात बहुत है परंतु अविरलता की ज्यादा चर्चा नहीं है। उन्होंने कहा कि भारत के पूर्व प्रधानमंत्री डॉ0 मनमोहन सिंह के कार्यकाल के दौरान गंगा रिवर बेसिन अथॉरिटी का गठन किया गया था। इसकी पहली बैठक में मुझे जाने का मौका मिला था। पहले दिन से ही हमने गंगा की अविरलता का विषय उठाया है। उन्होंने कहा कि गंगा पर कुछ बराज आजादी से पहले बन गये थे। आजादी के बाद हाल ही में एक दो दशक पहले गंगा नदी पर एक बड़ा बराज बनाया गया। टिहरी डैम का विरोध लोगों द्वारा विरोध कियागया था। उन्होंने कहा कि अगर भूकम्प आने से टिहरी डैम टूटता है तो बगल में उतर प्रदेश के नरोरा में अवस्थित एटोमिक पावर प्लांट प्रभावित होगा, इससे बांग्लादेश तक रेडिएशन फैल सकता है। उन्होंने कहा कि हम सच्ची बात को सामने रखते हैं। हमने प्रारंभ से ही अपनी बात रखी है। हमारा जन्म गंगा नदी के किनारे हुआ है। यहीं पर हमारी पढ़ाई–लिखाई हुयी। बख्तियारपुर का उदाहरण देते हुये मुख्यमंत्री ने कहा कि गंगा नदी से हमारा शुरू से लगाव है। गंगा नदी का पानी पीने में इस्तेमाल किया जाता था। गंगा नदी के जल प्रवाह और उसकी स्वच्छता को आज तक भूल नहीं पाये हैं। उन्होंने कहा कि इंजीनियरिंग के दौरान मैं फुर्सत के समय में हमेशा पटना के गॉधी घाट पर बैठता था। इसके पश्चात सरकार में आने के बाद वर्ष 2006 में फिर से गॉधी घाट गया। गंगा नदी की चौड़ाई पहले से पतली हो गयी है। पटना के कलेक्टेरिएट घाट का उदाहरण देते हुये मुख्यमंत्री ने कहा कि छठ पर्व के अवसर पर गंगा घाटों का जायजा लेने के लिये पहले कलेक्टेरिएट घाट से ही स्टीमर पर बैठ जाते थे। पिछले पॉच साल से इस घाट पर स्टीमर पर बैठना संभव नहीं है क्योंकि गंगा नदी काफी आगे चली गयी है। उन्होंने कहा कि क्षेत्र भ्रमण के दौरान एरियल सर्वे के लिये

जाता हूँ। गंगा नदी के सिल्ट डिपॉजिट को देखते हैं। उसे देखकर रोना आता है। आज गंगा नदी के जल प्रवाह में काफी कमी आ गयी है।

गंगा नदी में डॉल्फिन के संबंध में मुख्यमंत्री ने कहा कि गंगा रिवर बेसिन अथॉरिटी के एक बैठक में हमने डॉल्फिन को राष्ट्रीय जलजीव घोषित करने की मॉग की थी। उस पर तत्कालीन पर्यावरण मंत्री श्री जयराम रमेश ने वादा किया था और उसके दो दिन बाद डॉल्फिन को राष्ट्रीय जलजीव घोषित किया गया। उन्होंने कहा कि जंगल कैसा है, यह बाघ की संख्या पर निर्भर करता है, उसी तरह गंगा नदी की अविरलता एवं निर्मलता कैसी है, यह गंगा नदी में पाये जाने वाले डॉल्फिन की संख्या पर निर्भर करता है। उन्होंने कहा कि पूर्व केन्द्रीय जल संसाधन मंत्री श्री पवन बंसल को एक बैठक के दौरान हमने गंगा नदी की स्थिति से अवगत कराया था तथा उन्हें कहा था कि चलकर देख लीजिये कि गंगा नदी में किस तरह से सिल्ट डिपॉजिट हो रहा है। हमने उनको बक्सर से लेकर फरक्का तक गंगा नदी में हो रहे सिल्ट डिपॉजिट को दिखाया था। उन्होंने कहा कि फरक्का बराज की कुल डिस्चार्ज क्षमता 23 लाख क्यूसेक है, जबकि गंगा नदी में डिस्चार्ज 32 लाख क्यूसेक है। उन्होंने कहा कि जलजमाव की स्थिति को हमने देखा है। बाढ़ के दौरान कटिहार में जलजमाव को हमने देखा है। गंगा नदी जो छिछली होती जा रही है तो हमारा दायित्व बनता है कि हम गंगा नदी की बात को रखें। उन्होंने कहा कि आज जनमत चारो तरफ जग रहा है। इस सेमिनार का आयोजन गंगा की अविरलता पर किया गया है। उन्होंने कहा कि यह वर्ष गॉधीजी के चम्पारण सत्याग्रह का सौंवा साल है। मैं चाहता हूँ कि आप सभी इसमें शामिल हों। उन्होंने कहा कि गंगा की अविरलता पर कोई भी निर्णय होगा तो वह सभी की सहमति पर होगा। उन्होंने कहा कि अगर गंगा नदी से संबंधित विभिन्न बिन्दुओं पर चर्चा होगी तो कुछ न कुछ रास्ता निकलेगा। उन्होंने कहा कि मैं इस संबंध में शुरू से सभी जगह अपनी आवाज उठाता रहा हूँ। हमने इंटर स्टेट काउंसिल की बैठक में भी इस बात को उठाया था। आज ऑख के सामने गंगा नदी में आ रहे बाढ़ को देखता हूँ। आज पानी उन क्षेत्रों में घूस रहा है, जहॉ पहले पानी कभी नहीं घूसा। उन्होंने कहा कि इस वर्ष आये बाढ़ के दौरान प्रधानमंत्री ने दूरभाष पर बातचीत की थी। हमने कहा था कि मिलकर सारी बात बतायेंगे। हमने मिलकर प्रधानमंत्री को पूरी बात बतायी। इसके बाद प्रधानमंत्री द्वारा एक कमिटी भी बैठायी गयी। उन्होंने कहा कि आज लोग डेस्क पर बैठकर राय बनाते हैं, उन्हें जमीनी हकीकत पता नहीं होता है। उन्होंने कहा कि आयोजित इस सेमिनार में लोग अपने अनुभवों को साझा करेंगे। एक साथ होकर इस विषय पर चर्चा करेंगे तो इससे एक राय बन सकती है, उस पर आगे बढ़ा जा सकता है।

मुख्यमंत्री ने कहा कि पहले पटना के गंगा का पानी घर में रखा जाता था। उस पानी के रंग में कोई बदलाव नहीं आता था। आज स्थिति वैसी नहीं है, इसका प्रमुख कारण यह है कि गंगा के प्रवाह को रोका गया है। पहले गंगा नदी की पानी जो पोषक तत्व एवं जिवाणु होते थे, जो पानी को खराब होने से बचाते थे, आज वह नहीं है। फरक्का बराज के संबंध में मुख्यमंत्री ने कहा कि जब बराज बन रहा था तो पश्चिम बंगाल के अभियंता श्री कपिल भट्टाचार्य ने कहा था कि बराज के निर्माण से काफी सिल्टेशन होगा और बंगाल तथा बिहार को भीषण बाढ़ को झेलना पड़ेगा। उन्होंने कहा कि आज न सिर्फ बिहार बल्कि पश्चिम बंगाल को भी परेशानी हो रही है। उन्होंने कहा कि आज के दौर में रिवर राइन पोर्ट की उतनी आवश्यकता नहीं है।

राष्ट्रीय जलमार्ग के संबंध में मुख्यमंत्री ने कहा कि हमलोग शुरू से इसके सख्त खिलाफ हैं। इससे गंगा की अविरलता समाप्त हो जायेगी। हम इसके विरूद्ध हैं। उन्होंने कहा कि हम चाहेंगे कि सेमिनार में आये हुये सभी लोगों को बक्सर से फरक्का तक गंगा नदी में

हो रही सिल्टेशन को दिखाया जाय। उन्होंने कहा कि अब डर लगता है कि कहीं गंगा नदी की अविरलता समाप्त तो नहीं हो जायेगी। गत वर्ष हमने देखा था कि सोन नदी की अविरलता समाप्त हो गयी है। उन्होंने कहा कि गंगा के डाउन स्ट्रीम एवं अप स्ट्रीम दोनों ठीक होनी चाहिये। गंगा की अविरलता बनी रहनी चाहिये। गंगा नदी का संबंध न सिर्फ बिहार बल्कि पूरे देश से है। गंगा की अविरलता बनी रहे, यह बिहार ही नहीं बल्कि पूरे देश के हित की बात है। पूरे देश के पर्यावरण की बात है। उन्होंने कहा कि हमने मॉग की थी कि देश में सिल्ट मैनेजमेंट पॉलिसी बने परंतु वह किसी भी हालत में पर्यावरण को प्रभावित करने वाला नहीं हो। मुख्यमंत्री ने कहा कि गंगा नदी के सभी पहलुओं पर चर्चा करना बहुत जरूरी है। हर दृष्टिकोण से इसका अध्ययन होना चाहिये। गंगा नदी का डेल्टा क्षेत्र भी इससे प्रभावित हो रहा है। नदी में बीच–बीच में बालू के टीले हो गये हैं। गंगा नदी की अविरलता कम हो गयी है। इन सबको लेकर राष्ट्रीय स्तर पर चर्चा होनी चाहिये। अगर राष्ट्रीय स्तर पर चर्चा होगी तो लोग इसको इगनोर नहीं करेंगे। उन्होंने कहा कि राज्य सरकार की तरफ से मैं आश्वस्त करता हूँ कि इस सेमिनार का जो भी निष्कर्ष निकलेगा, हम उसे स्वीकार करेंगे।

ऑर्गेनिक फार्मिंग के संबंध में मुख्यमंत्री ने कहा कि हम ऑर्गेनिक फार्मिंग के पक्षधर हैं। उन्होंने कहा कि कुछ दिन पहले नॉबेल पुरस्कार विजेता श्री जोसफ स्टिगलेट आये हुये थे। वे नालंदा के सारिलचक गये। वहॉ पर किसानों द्वारा की जा रही ऑर्गेनिक फार्मिंग को देखा, जिस पर उन्होंने कहा कि बिहार के किसान यहॉ के वैज्ञानिकों से भी ज्यादा समझदार हैं। उन्होंने कहा कि हम ऑर्गेनिक फार्मिंग को बढ़ावा दे रहे हैं। इससे मिट्टी की उवर्रकता न सिर्फ बरकरार रहेगी बल्कि बढ़ेगी। साथ ही उत्पादन भी बढ़ेगा। उन्होंने कहा कि हम चाहते हैं कि खाद से मुक्ति मिल जाय, इस विषय पर हम आपको पूरा समर्थन देंगे। मुख्यमंत्री ने कहा कि इस सेमिनार में आप सभी गंगा नदी के अविरलता पर कुछ बिन्दू तय कीजिये। हम उसको स्वीकार करेंगे। उन्होंने कहा कि यह सम्मेलन काफी प्रभावी साबित होगा तथा यह देश को दिशा प्रदान करेगा।

इस अवसर पर मुख्यमंत्री ने गंगा नदी की अविरलता से संबंधित स्मारिका का विमोचन किया। इस अवसर पर जल संसाधन विभाग के तरफ से मुख्यमंत्री को प्रतीक चिह्न प्रदान किया गया। मुख्यमंत्री ने भी आये हुये विशेषज्ञों को प्रतीक चिह्न देकर सम्मानित किया।

सेमिनार के उद्घाटन सत्र को पद्मभूषण श्री चंडी प्रसाद भट्ट, श्रीमती वंदना शिवाजी, श्री जयंत बंदोपाध्याय, श्री भरत झुनझुनवाला, जल पुरूष श्री राजेन्द्र सिंह, जल संसाधन मंत्री श्री राजीव रंजन सिंह उर्फ ललन सिंह ने भी संबोधित किया।

इस अवसर पर ऊर्जा मंत्री श्री बिजेन्द्र प्रसाद यादव, विधान पार्षद श्री केदार नाथ पाण्डेय, प्रधान सचिव जल संसाधन श्री अरूण कुमार सिंह, मुख्यमंत्री के प्रधान सचिव श्री चंचल कुमार, मुख्यमंत्री के सचिव श्री अतीश चन्द्रा, मुख्यमंत्री के सचिव श्री मनीष कुमार वर्मा, जल संसाधन विभाग के अभियंता प्रमुख श्री इन्दू भूषण सहित अन्य गणमान्य व्यक्ति उपस्थित थे।

******